कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD-21

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2023

एम.एच.डी.-21 : मीरा का विशेष अध्ययन

समय : 2 घण्टे — अधिकतम अंक : 50

नोट : ***प्रथम*** *प्रथम अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) माता छोड़ी पिता छोड़े, छोड़े सगा भाई।
साधु संग बैठ-बैठ, लोकलाज खोई।।
संत देख दौड़ आई, जगत् देख रोई।
प्रेम आँशु डार-डार, अमर बेल बोई।।
मारग में तारग मिले, संत राम दोई।
संत सदा शीश राखूँ, राम ह्रदय होई।।
अंत में से तंत काढ़ी, पीछे रही सोई।
राणे भेज्या विष का प्याला, पीवत मस्त होई।।

(ख) साधुन के संग बैठ-बैठ के, लाज गमाई सारी।
नित प्रति उठि नींच घर जावो, कुलकूँ लगावो गारी।।
बड़ा घरांकी छोरी कहावो, नाँचो दे दे तारी।
बर पायो हिंदवाणो सूरज, अब दिल में कहा धारी।।
तार्‌यो पीहर सासरो तार्‌यो, माय मोसाली तारी।
मीरां ने सतगुरुजी मिलिया, चरण कमल बलिहारी।।

(ग) राम नाम की जहाज चलास्यां, भवसागर तिर जास्यां।।
चरणामृत को नेम हमारो, नित उठि दरसण पास्या।।
विषरा प्याला राणोजो भेज्या, इमरत करि गटकास्या।।
यो संसार विनास जानिकै, ताको संग छिटकास्यां।।
लोक लाज कुल काणिहु तंजिकै, निरभै निसांण घुरास्यां।।
मीरा के प्रभु हरि अविनाशी, चरणकमल बलि जास्यां।।

(घ) पीतमकू पतियाँ लिखूँ, कागा तू ले जाइ।
पीतमकू तू यौं जाइ कहियौ, थारी विरहनि अन्न न खाइ।।
तुम मति जानो पीतमा हो, तुम बिछड्यां मोहि चैंन।
मोहि चैंन जब होइगो, भरि-भरि देखूँ नैंन।।
मीरां दासी वारणै हो, पिव-पिव करत बिहाइ।
बेगि मिलौ प्रभु अन्तरजामी, तुम बिन रह्यो न जाइ।।

2. गुजरात में मीरा के प्रवास के कारणों की चर्चा कीजिए। 10

3. आराध्य के साथ मीरा के संबंधों को उदाहरण सहित विश्लेषित कीजिए। 10

4. मीरा की काव्य-भाषा के विविध पक्षों पर प्रकाश डालिए। 10

5. मीरा की कविता में 'जोगी' के स्वरूप का विवेचन कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

   (क) वाचिक परम्परा में मीरा

   (ख) मुक्ताबाई

   (ग) हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में मीरा

   (घ) दास्य भक्ति